International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628
Received: 26-01-2026, Accepted: 25-02-2026, Published: 12-03-2026
Volume 8, Issue 1, 2026, Page No. 187-193

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक : एक विश्लेषण

आरती कुमारी[1], उमेश कुमार[2]
[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, वीर कुवंर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत
[2] प्रोफेसर, लोक प्रशासन विभाग, वीर कुवंर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

सारांश
अपने राष्ट्रीय हित के संवर्द्धन में भारत द्वारा आत्मरक्षा हेतु की जा रही रक्षा तैयारियों के अतिरिक्त अपने सभी पड़ोसियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना का प्रयत्न, विश्व शान्ति की स्थापना में निःशस्त्रीकरण का प्रबल समर्थनएवं विश्व बन्धुत्व की भावनाओं के विकास हेतु सार्थक प्रयास भारतीय विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य हैं।यह बात और है कि भारत की उदारता व सदाशयता के बावजूद पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसियों से उसके (भारत) सम्बन्ध मधुर नहीं हो पा रहे हैं। आज जहाँ आतंकवाद व क्षेत्रीयता जैसी आंतरिक समस्यायें तथा पाकिस्तान की आतंकी समर्थनएवं कश्मीर में उसके द्वारा संचालित अप्रत्यक्षयुद्ध भारतीय सुरक्षा को चुनौती दे रहे हैं, वहीं शीतयुद्ध की समाप्तिएवं विश्व पटल पर सोवियत अनुपस्थिति से उत्पन्न रिक्तिता की पूर्ति हेतु दक्षिणएशिया में अमेरिका की नूतन भूमिका से न केवल भारत अपितु सभी दक्षिणएशियाई राष्ट्र अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त कर रहा है। नवीन विश्व वातावरण में भारतएशिया में अपना सहयोगी प्रभाव क्षेत्र विस्तृत करने की रणनीति पर चल रहा है। विश्व के सभी शक्तिशाली देशों के समर्थन और विश्वास ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कोएक नया आयाम दिया है। भारत अपने राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ–साथ सामूहिक सुरक्षा की स्थापना में समर्थ दिख रहा हैं।
पिछले ग्यारह वर्षों में भारत की रक्षायात्रा साहसिक निर्णयों, रणनीतिक दूरदर्शिता और अटूट संकल्प द्वारा परिभाषित की गई है। स्वदेशी उत्पादन को बढ़ाने और निर्यात का विस्तार करने से लेकर नवाचार को अपनाने और आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने तक, देश ने सच्ची आत्मनिर्भरता की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। इनोवेशन फॉर फॉर डिफेंसएक्सीलेंस, रक्षा गलियारे और सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जैसी पहल भविष्य के लिए तैयार रक्षा ईको सिस्टम की नींव रख रही हैं। साथ ही, सीमा पार आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ भारत के सख्त रुख ने राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। निरंतर निवेश, नीतिगत सुधारों और बढ़ती वैश्विक उपस्थिति के साथ, भारत अब केवल अपनी सीमाओं की रक्षा नहीं कर रहा है, बल्कियहएक मजबूत, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर सैन्य शक्ति का निर्माण कर रहा है। रक्षा बजट में लगातार वृद्धि देखी गई है। रक्षा बजट 2013–14 के 2.53 लाख करोड़रूपए से बढ़कर 2025–26 में 6.81 लाखरूपए हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन की विषय–वस्तु भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक का विश्लेषण है।

मूलशब्दः अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण, आर्थिक विकास, कूटनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, विदेश नीति

प्रत्येक राष्ट्र अपनी सुरक्षा नीति का निर्माण अपने देश की आन्तरिकएवं बाह्य समस्याओं को ध्यान में रखकर करता है। वर्तमान परिवेश में सभी देश अपनी शक्ति व सुरक्षा व्यवस्था को सदैव दूसरे देशों की तुलना मेंयथापूर्वक बनाये रखने और सुदृढ़ बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के अन्तर्गत राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, भावनात्मक, भौलिकएवं मार्मिक मूल्यों तथा मापदण्डों को सुरक्षित रखने का संकल्प करते हुए राष्ट्र के विकास की गति को निरंतरता बनाये रखना होता है। किसी राष्ट्र की रक्षा आज उसकी सशक्त सेवाओं तथा सीमाओं की सुरक्षा तक सीमित नहीं है। सम्पूर्ण राष्ट्र के समस्त साधनों का सक्रिय सहयोग सुरक्षा व्यवस्था में होता है और प्रत्येक पहलू की अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।एक राष्ट्र को सशक्त, सबलएवं प्रगतिशील बनाने के लिए रक्षा के साथ–साथ राष्ट्र के अन्य आवश्यक सुरक्षा तत्त्वों की कदापि अवहेलना नहीं की जा सकती है।एक राष्ट्ररूपी शरीर की सुरक्षा में प्रत्येक अंग का अपना–अपना महत्व है। सुरक्षा के लिए सेनारूपी सशक्त भुजाओं के अलावा अन्य अंगों को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि सब के सहयोग से ही बाहुबल (सेना) सशक्त हो सकती है।
वर्तमानयुग में वैज्ञानिकएवं तकनीकी प्रगति ने जहांयुद्ध के स्वरूप को सम्पूर्ण बना दिया है, वहां सम्पूर्णयुद्ध के फलस्वरूप राष्ट्रीय सुरक्षा का स्वरूप भी विस्तृत हो गया है।यही कारण है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के सन्दर्भ में राष्ट्र की सामाजिक शक्ति के साथ–साथ उसकी आर्थिक, भौगोलिक, औद्योगिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिकएवं प्रौद्योगिकी स्थिति का भी परीक्षण किया जाता है। अब राष्ट्रीय सुरक्षा भाव रक्षा साधनोंएवं सामरिक शक्ति पर निर्भर नहीं करती बल्कि राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रगतिएवं समस्त साधनों से भी प्रत्यक्षरूप से सम्बद्ध हो चुकी है। अतः राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्वों का उल्लेख करना आवश्यक है, जिससे सुरक्षा की अवधारणा को सहीरूप में समझाएवं अनुभव किया जा सके। राष्ट्रीय सुरक्षा के तत्त्व इतने अधिक अन्तर्निर्भरएवं परस्परएक–दूसरे से प्रत्यक्षरूप से जुड़े हुए हैं किएक–दूसरे का उल्लेख किये बिना सहीरूप में मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा नीति का निर्धारण किसीएकया कुछ कारकों द्वारा नहीं वरन् अनेक कारकों के सम्मिश्रण द्वारा होता है, जो सुरक्षा नीति को अलग–अलग स्थितियों में भिन्न–भिन्न प्रकार से प्रभावित करते हैं।
किसी राष्ट्र को सुरक्षा हेतु उसका आकार, भौगोलिक स्थिति, आर्थिक विकास, संस्कृतिएवं इतिहास, विदेश नीति, बड़ी शक्तियों की संरचना, गठबन्धनों की स्थिति, प्रौद्योगिकी, सामाजिक संरचना, जनमत, राजनीतिक उत्तरदायित्व, कूटनीति, सरकारी संरचना तथा आन्तरिक व बाह्य परिस्थितियों को राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारक कारकों में स्थान दिया गया है। सामान्यतः राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्धारक केरूप में जिन कारकों पर विद्वानों की आम सहमति है वे हैं–

1. भूगोल,
2. आर्थिक विकास,
3. राजनीतिक परम्परा,

4. स्वदेशी वातावरण,
5. अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण,
6. मानवीय तत्त्व,
7. सैनिक शक्ति,
8. राष्ट्रीय चरित्र,
9. प्रौद्योगिकी प्रगति, एवं
10. कूटनीति।

किसी भी देश की सुरक्षा नीति निर्धारित कारने में उस देश के राष्ट्रीय हितों जैसे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा, राष्ट्रीय नीति व मूल्य, उपलब्ध संसाधन व साधन, आंतरिक–बाह्य खतरों का सटीक आकलन तथा संचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन्हीं के आधार पर राष्ट्रीय सुरक्षा नीति, अपने राष्ट्र की क्षेत्रीय अखण्डता, सामाजिक– आर्थिक – राजनैतिक व्यवस्था व मूल्यों की सुदृढ़ता के साथ वर्तमान– भविष्य के खतरों के प्रतिएकीकृत है सोच विकसित करती है।यहीएकीकृत सोच राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु राष्ट्र को अपने आंतरिक–बाह्य में मजबूत होने की ताकत देती है और मार्ग में आने वाली बाधाएँ किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा चुनौतियाँ बन जाती है। इसका प्रतिकार कोई राष्ट्र बाध्यरूप से स्वयं को मजबूत बनाने के लिए राजनीतिक गठबंधन करके, उचित कुटनीतिक कदम उठाकर तथा परस्पर आर्थिक सैनिक संधियों द्वारा करता है तथा आंतरिकरूप से मजबूती के लिए उपलब्ध संसाधनों के उचित विनियमीकरण द्वारा, राज्य को समर्थन देने वाली राजनीतिक सुदृढ़ता उत्पन्न करके तथा राष्ट्रीय स्तर पर जनमतएकीकरण के प्रयास द्वारा करता है (सिन्हा, 2012)[2]

साहित्य–पुनरावलोकन (Review of Literature)

"भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषतः वर्ष 2014 से अबतकःएक विश्लेषणात्मक अध्ययन" विषय पर शोधार्थी की जानकारी में तथा वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के उपलब्ध अभिलेख के अनुसार अब तक शोध प्रबन्ध सम्पन्न नहीं हुआ है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर राष्ट्रीय हित पर पृथक–पृथकरूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अबतक भले ही अनेक शोध हुए हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में कई महत्वपूर्ण पुस्तकोंएवं स्तरीय सन्दर्भ ग्रन्थों की मदद ली गई। शोध प्रबंध को अन्तिमरूप देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय राजनीति तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर लिखित अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया है। यहाँ कुछ प्रमुख साहित्य समीक्षा प्रस्तुत हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा विषय पर डॉ० ओमप्रकाश तिवारी (रक्षा अध्ययन विभाग में प्रोफेसर सन बी० पी० कॉलेज, देवरिया, गोरखपुर,यू०पी०) ने शोध कार्य सम्पन्न किया है तथा इसपर उनकीएक महत्वपूर्ण पुस्तक भी ज्ञानदा प्रकाशन, पी०एण्ड डी०, नई दिल्ली से प्रथम संस्करण वर्ष 2003 में प्रकाशित है। प्रो० ओम प्रकाश तिवारी ने अपने शोध आधारित इस महत्वपूर्ण पुस्तक में राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ–साथ भारत की वैदेशिक नीति पर भूगोल के प्रभाव पर बहुत ही गम्भीर परिचर्चा की है। प्रस्तुत पुस्तक में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक देश के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा की राष्ट्रीय हित्त का अनिवार्य विषय होता है तथा राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय हित की अवधारणा को भूगोल सन्दर्भ में प्राप्त करता है। इस पुस्तक में कुल 200 पृष्ठ हैं, जिनमें राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय सुरक्षा, भू–राजनीतिएवं भारत का भू–युद्ध कौशल राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति, भारत की परिवर्तित वैदेशिक नीति, का व्यवस्थित विवेचन किया गया है।

भारती भवन प्रकाशन, पटना से गांधीजी राय कीएक महत्वपूर्ण पुस्तक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के नाम से प्रकाशित हुई है, जिसका प्रथम संस्करण वर्ष 1993 में तथा वर्ष 2014 में नवीन संस्करण प्रकाशित है। पुस्तक के अंतर्गत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक, दोनों ही पक्षों को भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में भी व्यवस्थितरूप में प्रस्तुत किया गया है। ओरिएण्ट ब्लैकस्वॉन प्रा० लि० प्रकाशन से तपन विस्वाल की पुस्तक 'अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध' वर्ष 2010 में प्रकाशित हुई।यह पुस्तक उभरती हुई अन्तर्राष्ट्रीय प्रवृतियों के संदर्भ में भारतीय विदेश नीति के भूगोलएवं परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करती है। प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय वैदेशिक नीति के सैद्धान्तिकएवं व्यवाहारिक पक्षों को भूगोल के सन्दर्भ में बहुत ही व्यवस्थितरूप में रखा गया है।

'भारत की विदेश नीति पुनरावलोकनएवं संभावनाएँ' नाम कीएक प्रमुख पुस्तक ऑक्सफोर्डयूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित पुस्तक का सम्पादन सुमित गांगुली (इंडियन कल्चरएण्ड सिविलाईजेशन के रविन्द्रनाथ टैगोर चेयर तथा इंडियानायूनिवर्सिटी, ब्लूमिंगटन में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर) के द्वारा किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक का वर्ष 2010 में प्रथम अंग्रेजी संस्करण आया था, जो वर्ष 2018 में प्रथम हिन्दी संस्करण केरूप में भी प्रस्तुतएवं प्रकाशित है।यह पुस्तक 1947 से 2010 तक भारत की विदेश नीति के उद्भव काएक व्यापक विवरण प्रस्तुत करता है। मुख्यतःयह पुस्तक भारत के पड़ोसी राज्यों तथा वैश्विक व्यवस्था के अन्य प्रमुख राज्यों के साथ भारत के संबंध विशेषतः भौगोलिक सम्बन्ध केरूप में व्यवस्थित है। इस पुस्तक के सभी अध्याय विश्लेषण के स्तर की तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं, जोएक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में मौलिक घटनाओं को व्यवस्थित करने हेतुएक सुव्यवस्थित वैचारिक पद्धति है।

'स्वतंत्र भारत की विदेश नीति' नाम कीएक महत्वपूर्ण पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित तथा वी०पी० दत्त और अनुवाद नरेन्द्र तोमर द्वारा लिखित है। प्रथम संस्करण का वर्ष 2009 है।यह उल्लेखनीय है कि डॉ० वी०पी० दत्त दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति होने के साथ–साथ राज्य सभा के पूर्व नामांकित सदस्य भी है' और विदेशी मामलों में संसदीय सलाहकार समिति केएक पूर्व सदस्य भी रहे हैं। वे 'इंडियन स्कूल ऑफ इन्टरनेशल स्टीडज' में पूर्वएशियाई अध्ययन विभाग के अध्यक्ष केरूप में कार्यभार संभालने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के चीनी और जापानी अध्ययन विभाग के भी अध्यक्ष रहे। वे विगत आधी सदी से भारत की विदेश नीति पर लिखते रहे हैं। प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रों के समुदाय में देश की वर्तमान स्थिति को उसकी विदेश नीति के अनुरूप व्यक्त किया गया है।

राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध परएक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित हुई जो प्रोफेसर बी०एम० जैन द्वारा लिखित है। प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन वर्ष 2013 है। **'**अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध**'** नाम की इस पुस्तक में प्रोफेसर बी०एम० जैन ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकासएवं शीतयुद्धोत्तर वैश्वीकरणएवं क्षेत्रीयकरण की अवधारणाओं का विस्तार के विवेचन के साथ–साथ विदेश नीति पर भूगोल के व्यापक प्रभाव का भी विवेचन गहनतम विवेचनएवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक में नवीन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में संयुक्त राष्ट्र की पुनर्भाषित भूमिका, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की सार्थकता,यूरोप का बदला स्वरूपएवं क्षेत्रीय आर्थिक संगठनों जैसेयूरोपीय संघ तथा आसियान के बढ़ते प्रभाव के अतिरिक्त मध्य–पूर्वएशिया, अफगानिस्तान, भौगोलिक पक्षों में तेजी से बदलते घटनाचक्रों का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक में अमरीका,रूसी गणराज्य, चीन व भारत की विदेश नीतियों का समुचित आकलन के अलावा शस्त्र–नियंत्रण, विश्व निःशस्त्रीकरण, नाटोएवं विश्व व्यापार संगठन के क्रियाकलापों का विशद् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

शेख दत्ता कीएक महत्वपूर्ण पुस्तक 'इंडियाज डिफेन्सएण्ड नेशनल सिक्यूरिटी' जो०बी० बुक्स से प्रकाशित है, जिसका प्रकाशन वर्ष 2014 है। प्रस्तुत पुस्तक में शेख दत्ता ने भारत के सामने राष्ट्रीय

सुरक्षा को लेकर प्रमुख चुनौतियों को वैश्विकएवं भौगोलिक सन्दर्भ में स्पष्ट किया है। इतना ही नहीं, इस पुस्तक में बताया गया है कि भारत वैश्विक परिदृश्य के सन्दर्भ में अपनी वैदेशिक नीति में राष्ट्रीय हित की गारंटी कैसे प्राप्त करना चाहता है? पुस्तक में भारत की विदेश नीति को प्रभावी बनाने के सन्दर्भ में विस्तार से चर्चा की गई है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखन में लेखक का दृ ष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट तथा निरपेक्ष है, जिसका शोध में सहयोग लिया गया है।

'हाउ इंडिया मैनेज इट्स नेशनल सिक्यूरिटी' नाम की पुस्तक अरविन्द गुप्ता द्वारा लिखित है। अरविन्द गुप्ता वर्ष 2014–2022 –2022 के बीच भारत सरकार में 'राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद् सचिवालय में कार्यरत रहे तथा उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा विषयक गहन जानकारी है, जो प्रस्तुत पुस्तक में स्पष्टरूप में दिखती भी है।यह पुस्तक वर्ष 2018 में पेंगवीन प्रकाशन से प्रकाशित है। प्रस्तुत पुस्तक में भारत तथा चीन की ओर से भौगोलिक चुनौतियों की चर्चा की गई है। इतना ही नहीं, वर्तमान में भारत के सामने कौन–कौन सी चुनौतियाँ है, उनको भी प्रस्तुत पुस्तक में स्पष्ट किया गया है।

मानव सुरक्षा तत्वों नेएक व्यापक आयाम हासिल कर लिया है, क्योंकि वे सैन्य सुरक्षा से परे जाते हैं और मानवीय गरिमा के लिए खतरा पैदा करते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा को अपने नागरिकों की सुरक्षा और रक्षा के लिए राज्य की क्षमता केरूप में वर्णित किया गया है। मकिंडा की सुरक्षा की परिभाषा राष्ट्रीय सुरक्षा के इस दायरे में फिट बैठती है। दूसरी ओर, वैश्विक सुरक्षा प्रकृति और कई अन्य गतिविधियों, विशेषरूप से वैश्वीकरण द्वारा राज्यों पर डाली गई आवश्यकता से विकसित हुई है।येऐसी मांगे हैं जिन्हें किसी भी राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र के पास अपने दम पर संभालने की क्षमता नहीं है और इसलिए राज्यों के सहयोग की मांग की जाती है। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय सुरक्षा टूटनाएक वैश्विक सुरक्षा समस्या है। इसलिए,यह सभी के हित में है कि किसी भी राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौती को वैश्विक समस्या में बदलने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। देशों के बीच वैश्विक अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रितता, जिसे दुनिया ने अनुभव किया है और शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद से अनुभव करना जारी रखे हुए है, राज्यों के लिएयह आवश्यक बनाता है कि वे अधिक सहयोग करें औरएक साथ काम करें। पारंपरिक राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति अपर्याप्तरूप से सुसज्जित है (श्रीवास्तव, 2018)[3]।

भारत का बाह्य परिवेश जटिल और चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। हम लोग न सिर्फ भूमंडलीकरण के दौर में भू–राजनैतिक संदर्भों में बल्कि भू–आर्थिक संबंधों में भी संक्रमणकालीन विश्व में रह रहे हैं जिसमें व्यापार वित्तीय प्रवाह वित्तीय प्रवृत्तियां जनसांख्यकीय बदलाव तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था में भागीदारी केरूप में शामिल हैं। भारतीय शासन कीरूपरेखा के विकास से लोकतांत्रिक संभावनाओं के विस्तार के जरिए राज्य से की गई अपेक्षाओं के साथ तालमेल बनाए रखने के निरंतर प्रयास का पता चलता है। सरकार ने नई चिंताओं नए सहभागियों और नई ऊर्जाओं का समावेश करने का प्रयास किया है। भारत को हमेशा से ही अपनी विविधता और विजातीयता का प्रबंधन करना पड़ा है। इसका लोकतांत्रिक शासन निरंतर प्रतिस्पर्धा आकांक्षाओं के बीच सामांजस्य बिठाने की कला सीख रहा है औरयह वार्ता प्रक्रिया से समृद्ध हुआ है। आंतरिक सुरक्षा पर हमे अपने सुरक्षा बलों को मजबूत बनाने के लिए नई तकनीकों की आवश्यकता है। साथ ही सीमा पार आतंकवाद से निपटने के लिए कड़े कानूनों की भी जरूरत है। आतंकवाद नक्सलवाद और सांप्रदायिक ताकतों को देश की आतंरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है तथा इनसे निपटने के लिए और अधिक प्रयासों की जरूरत है और सुरक्षा संबंधी विभिन्न चुनौतियों से सख्ती से निपटाया जाना चाहिए (अहिरवार, 2019)[4] ।

किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा नीति तीन महत्वपूर्ण लक्ष्य सामने रखकर बनायी जाती है– पहला देश की संप्रभुता की रक्षा करना, दूसरा क्षेत्रीयएकता और अखंडता बनाये रखना, तीसरा देश में आंतरिक शांति बनाये रखना। सचयह है कि स्वतंत्रता के बाद से ही भारत आंतरिक चुनौतियों के मोर्चे पर कई समस्याओं से जूझ रहा है। समाजएवं राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए संगठित रुप से अव्यवस्था और असंतुलन का माहौल निर्मित किया गया। आंतरिक सुरक्षा के कमजोर होने का मतलब है देश के लॉएन ऑर्डर का कमजोर होना।यह विधि के शासन के समक्षएक चुनौती है। इससे राष्ट्र की छवि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश भी प्रभावित होता है। इसलिएयह जानना आवश्यक है कि आंतरिक सुरक्षा के प्रबंधन की क्या खामियां है। इस संदर्भ में अनेक बातें दिखायी देती है जो इस तरह है– पहली खामी है दीर्घकालिक नीतियों का अभाव होना। किसी भी समस्या के समाधान के लिए दीर्घकालिक नीति का रेखाकन जरुरी है। फिर उसी के अनुसार वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए दीर्घकालिक नीतियां बनायी जाती है। लेकिन, भारत सरकार के पास कश्मीर समस्या के लिए कोई दीर्घकालिक नीति नहीं है। इसी प्रकार माओवादी हिसा से निपटने के लिए भी सरकार की कोई स्पष्ट दृष्टि नहीं दिखायी देती है।यहएक बड़ी खामी है। दूसरा खामी है अपेक्षित पुलिस सुधार का न होना। अधिकांश राज्यों में पुलिस पुरातन व्यवस्था के अनुपालन को मजबूर है। उसकी ट्रेनिंग से लेकर हथियार तक अत्याधुनिक नहीं होते। दरअसल आज हालातऐसे है कि बाहरीएवं आंतरिक सुरक्षा में भेद करना मुश्किल है जहाँ बाह्य सुरक्षा का सम्बन्ध देश की विदेशनीति से सम्बंधित था, वहीं आंतरिक सुरक्षा घरेलू नीति से सम्बंधित था । हमारी सुरक्षा को सही मायने में सुरक्षित करने के लिए प्रशासन के साथ साथ प्रत्येक नागरिक को भी कदम उठाने होंगे तभीएक सुरक्षित भारत की कल्पना की जा सकती है । आतंकवाद और नक्सलवाद भारतीय सुरक्षा बलों के लिए तो अभिशाप बन ही गए हैं, इनसे आर्थिक विकास भी सीधे तौर पर प्रभावित हो रहा है। जहां तक आतंकवाद की बात है तो जम्मू कश्मीर में चल रहे अलगाववादी आंदोलन से उसे ताकत मिल रही है। कश्मीर मेंएक बड़ा समूहऐसा है, जो भारत विरोधी गतिविधियों में शामिल है। उन्हें भटके हुए जवान बता कर सरकार असली खतरे से आंख नहीं मूंद सकती है। उनकी वजह से आतंकवादियों को घुसने, शरण लेने, खुफिया जानकारी हासिल करने और सुरक्षा बलों पर हमला करने का मौका मिलता है। घाटी के लोग ही उन्हें सारी मदद मुहैया कराते हैं। अगर सीमा पार से होने वाली घुसपैठ और आतंकी वारदातों को रोकना है तो कश्मीर घाटी में हर कीमत में शांति बहाली करानी होगी।[5]

भारत के समक्ष, जहाँएक ओर वैविध्यपूर्ण जनसंख्या, विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र और जटिलतापूर्ण सामाजिक–राजनीतिक ताना–बाना है, तो वहीं दूसरी ओर आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर भी कई चुनौतियों का सामना है। किसी राष्ट्र को पारंपरिक और उभरते दोनों खतरों से सुरक्षित रखने के लिए बहुआयामी गतिशीलता की व्यापक दृष्टि अनिवार्य है। भारत में आंतरिक सुरक्षा का वातावरण पेचीदा और चुनौतीपूर्ण है। इस पर बाहरी और घरेलू वातावरण का प्रभाव पड़ता है।ऐतिहासिक कारक भी आंतरिक सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। जिनमें विभाजन से जुड़ी समस्याओं की भी भूमिका रही। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत सशक्त हुआ है और आज राष्ट्रीय और वैश्विक मामलों मेंएक प्रमुख खिलाड़ी बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय सुरक्षा की समग्र अवधारणा में, आंतरिक सुरक्षा देश के समग्र राष्ट्रीय सुरक्षा परिवेश काएक अभिन्न अंग है। हालाँकि देश को विश्वास है कि जटिलता के बावजूद, इन चुनौतियों को ठोस नीतियों और संस्थागत क्षमता के संयोजन के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है।

भारत का आंतरिक सुरक्षा परिदृश्य जटिल और बहुआयामी है, जिसमें उभरते खतरों से निपटने के लिए निरंतर सतर्कता और सक्रिय उपायों की आवश्यकता है। आतंकवाद, उग्रवाद, सांप्रदायिक हिंसा, साइबर खतरों, सीमा प्रबंधन, कट्टरपंथ और अवैध आप्रवासन सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु खुफिया जानकारी साझा करने, तकनीकी प्रगति, सामाजिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग से जुड़ेएक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इन चुनौतियों को प्राथमिकता देकर और व्यावहारिक समाधान लागू करके, भारत अपने नागरिकों के लिए अधिक सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की दिशा में प्रयास कर सकता है (वाजपेयी, 2023)[6]।

पिछले ग्यारह वर्षों में भारत के रक्षा क्षेत्र में असाधारण परिवर्तन आया है। पैमाने और महत्वाकांक्षा की सीमित सीमा से कहीं बढ़ करयह अबएक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर इको सिस्टम में बदल गया है।यह बदलाव दृढ़ रणनीतिक संकल्प और राजनीतिक सोच से आया है रणजनीतिक नीतियों ने उत्पादन और खरीद से लेकर निर्यात और नवाचार तक प्रत्येक क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार किया है (प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो, 2025)[7] ।

अध्ययनार्थ समस्या (Problem to be Studied)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आधुनिक राष्ट्र राज्यों के उदय के साथ ही राष्ट्रीय हित की अवधारणा महत्वपूर्ण हो गई है तथा राष्ट्रीय हित की अवधारणा में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा महत्वपूर्ण है। प्रत्येक देश की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय हित का संरक्षण ही होता है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा को केन्द्रीय विषय बताया जा सकता है। वस्तुतः किसी राष्ट्र की उन्नति के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शर्त है उसका चतुर्दिक और बहुविधि सुरक्षित रहना। प्रादेशिक अखण्डता, प्रभुसत्ता, स्वतंत्रता व राष्ट्र के आन्तरिक मूल्यों की रक्षा तथा बाह्य आक्रमणों का प्रतिकार करना प्रत्येक राष्ट्र का प्रथम उत्तरदायित्व है। समग्रयुद्ध के इस काल में शिथिल रक्षा तंत्र न तो राष्ट्रीयएकता को अक्षुण रख सकता है और न ही राष्ट्रीय विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियों का सृजन ही कर सकता है। इन महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्वों के निर्वहन हेतु जहाँएक ओर रक्षा सेनाओं की समाघात क्षमता को पर्याप्त दृढ़ बनाना आवश्यक है वहीं राष्ट्रीय शक्ति का विकास व उनका संरक्षण भी अपरिहार्य है।यही कारण है कि आज विश्व के सभी छोटे व विशाल राष्ट्र राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष उत्पन्न हो रही विभिन्न चुनौतियों को ध्यान में रख कर अपनी रक्षा तैयारियों के समानान्तर अपने आंतरिक सुरक्षा आयामों के प्रति सचेष्ट व सतर्क होते जा रहे हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपनी सीमाओं की सुरक्षा और आंतरिक शांति बनाए रखने के लिए निरन्तर संकल्पित रहता है। राष्ट्रीय अखण्डताएवं सार्वभौमिकता बनाए रखने के लिए किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा का आन्तरिक व बाह्य दृष्टि से अध्ययन व मूल्यांकन करना सैन्य अध्ययन काएक महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि पर्याप्त सुरक्षा के अभाव में कोई भी राष्ट्र अपनी अखण्डता बनाये रखने तथा शान्तिपूर्ण ढंग से चतुर्मुखी विकास की कार्यवाही कदापि नहीं कर सकता। पर्याप्त सुरक्षा हेतु जहाँएक ओर राष्ट्रीयएकीकरण की आवश्यकता होती है, वहीं दूसरी ओर अपनी सामरिक क्षमता को इतना सुदृढ बनाना होता है कि उत्पन्न सम्भावित खतरों का समुचित जवाब देने के साथ–साथ उन्हें निष्क्रिय भी बनाया जा सके। जब किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा की बात की जाती है तब इसके अन्तर्गत उसकी सेनाओं की सामरिक क्षमता, प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता, जनसंख्या, मजबूत अर्थतंत्रएवं मजबूत राजनीतिक मंच का भी विवरण दिया जाता है। राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रश्न इतना व्यापक है कि इसके अंतर्गत सामरिक क्षमता के अतिरिक्त आर्थिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, औद्योगिक व भौगोलिक तथ्य भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। आण्विक विश्व व्यवस्था में भारत सहित विश्व के सभी राज्यों के समक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा महत्त्वपूर्ण प्रश्न बन गया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के सुदृढ़ ढाँचे (तिंउम ूवता) के निर्माण हेतु सर्वप्रथम राष्ट्र के मार्मिक मूल्यों की पहचान तथा बाद में आंतरिक व बाह्य सुरक्षा के विभिन्न खतरों के स्वरूपएवं प्रकृति का विश्लेषण आवश्यक होता है। आन्तरिक व बाह्य सुरक्षा कारकएक दूसरे से सम्बद्ध होने के साथ–साथएक दूसरे को प्रभावित (पदजमतंबज) भी करते हैं। जहाँएक ओर विभिन्न बाह्य राजनैतिक, आर्थिक व सैनिक दबाव राष्ट्र की आंतिरक सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावित करते हैं वहीं विभिन्न आंतरिक समस्याएँ बाह्य खतरों को जन्म देती हैं।यही कारण है कि सुदृढ सुरक्षा ढाँचे के निर्माण में जहाँएक ओर सुदृढ़ अर्थ तन्त्र, सैन्य क्षमता, राजनैतिक स्थिरता, सामाजिक सशक्ति (वबपंस बवीमेपवद)एवं सुदृढ़ संस्थानिक ढाँचा (प्देजपजनजपवदंस थ्ंइतपबे) आदि कारक प्रमुख भूमिका का निर्वाह करते हैं वहीं आधुनिकीकरण की अस्त–व्यस्तता (ज्नतइनसमदबम वि डवकमतदप्रंजपवद), जातीय विभाजन तथा भ्रष्टाचार आदि राष्ट्रीय सुरक्षा के सामने संकट खड़ा करते हैं।यह बात भारत में भी लागू होती है।

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा में भौगोलिक परिस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्रीय सुरक्षा की सुदृढ़ताएवं संतुलित सुरक्षा नीति निर्धारण में भौगोलिक कारकों की निर्णायक भूमिका होती है। विभिन्न भौगोलिक कारक ही राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु अपेक्षित आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक व सैनिक आधार उपलब्ध कराते हैं और राष्ट्र के आंतरिक व बाह्य मूल्यों की सुरक्षा हेतु स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराने के साथ–साथ प्रतिरोधक क्षमता का सृजन करते हैं। किसी राष्ट्र की भौगोलिक अवस्थिति, क्षेत्रीय विस्तार, धरातलीय संरचना, सीमायें व सीमान्त, जलवायु व प्राकृतिक वनस्पतियाँ आदि। भारत मेंऐसे प्रमुख भौगोलिक कारक हैं जिनकी राष्ट्र की सुरक्षा नीति के निर्धारण मेंएवं राष्ट्रीय विकास तथा समृद्धि में निर्णायक भूमिका होती है। अतः राष्ट्रीययुद्ध नीति, सैन्य संगठन, सामरिकी, सैन्य प्रशिक्षणएवं सैन्य संचालन में इन तत्वों की महत्ता को अस्वीकार नहीं जा सकता हैं।

सामाजिक चेतनाएवं राजनीतिक परिवेश से राष्ट्र का चरित्र निर्धारित होता है। राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय मनोबल, विचारधारा व राष्ट्रीयएकता आदिऐसे सामाजिक व राजनैतिक कारक हैं, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, प्रतिरक्षाएवं राष्ट्रीय अखंडता के निर्धारण व इसको बनाये रखने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण होते हैं। वास्तव में, सशस्त्र सेनाओं, जो सक्रिय प्रतिरक्षा का प्रमुख अंग होती है, को सामाजिक परिवेश तथा सामाजिक व राजनैतिक उथल–पुथल के प्रभाव से पूर्णतः मुक्त रखना अत्यधिक दुष्कर है, क्योंकि राष्ट्रीय सामाजिक व राजनैतिक जीवन के सभी पहलू सशस्त्र सेनाओं में निश्चितरूप से प्रतिबिम्बित होते हैं।यही कारण है कि वर्तमान समय में भारत सहित दुनियाँ के अन्य देशों में भी राष्ट्रीय सुरक्षा की सुदृढ़ता हेतु राष्ट्र के सामाजिक व राजनैतिक पहलुओं को स्वस्थ व सुदृढ़ बनाये रखनाएक राष्ट्रीय आवश्यकता बन गई है। समकालीन राजनीतिएवं सामरिक परिवर्तनों ने भारत की रक्षा समस्याओं को जटिल बना दिया हैं।यह अलग बात हैं कियह समस्या कमोबेश भारतीय विभाजन से जहाँएक ओर भारत की रक्षा जिम्मेदारियाँ बढ़ गयीं वहीं क्षेत्रीय सामरिक अस्थिरता तथा हिन्द महासागर क्षेत्र में हुई उथल–पुथल से भारत का सुरक्षा परिदृश्य ही परिवर्तित हो गया हैं। इन सभी घटनाओं ने भारत की रक्षा व्यस्था को प्रभावित तो किया ही विदेश नीति, औद्योगिक व व्यापार नीतियाँ भी अप्रभावित न रह सकीं। भारत की गुटनिरपेक्षता की वैदेशिक नीति इन्हीं परिस्थितियों की उपज थी। पाकिस्तान के निर्माण,एक संगठित राष्ट्र केरूप में साम्यवादी चीन के उदय तथा उसके द्वारा आणविक हथियारों के निर्माण व संग्रहण ने भारत के समक्ष नवीन रक्षा चुनौती उत्पन्न कर दी थीं तथा आज भी चीन भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के सामने चुनौती

खड़ा कर रहा हैं। उधर, अमेरिका व सोवियत संघ के मध्य प्रारंभ शीतयुद्धएवं प्रभाव क्षेत्र विस्तार की नीति ने दक्षिणएशिया को संवेदनशील क्षेत्र बना दिया था। अब वर्ष 2022 सेरूस–यूक्रेनयुद्ध ने विश्व में सामूहिक सुरक्षा के सामने नई समस्या को जन्म दिया है, हालांकि 18 मई, 2023 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जेलेन्सकी की मुलाकात में सामूहिक सुरक्षा के प्रति भारत ने प्रतिबद्धता का परिचय दिया है।

यह उल्लेखनीय हैं कि 'भारत की नेफा में पराजय न केवल सैन्य स्तर पर हुई अपितुयुद्ध क्षेत्र में कमान निष्क्रियता तथा सैन्य अधिकारियों में उत्पन्न पारस्परिक मतभेद का परिणाम थी।' देश मेंएक के बादएकऐसे मंत्री सत्तारूढ़ हुए जिन्हें देश की सुरक्षा के बारे में न तो कोई जानकारी थी और न ही अभिरूचि। इन नेताओं द्वारा अपने विदेशी दौरों तथा फौजी छावनियों में सम्बोधन के समय बार–बार अहिंसा, शान्ति प्रियता तथायुद्ध का कोई इरादा न रखने की घोषणा से सेनाओं का मनोबल तो प्रभावित हुआ ही साथ ही साथ रक्षा तैयारियों पर ध्यान देना उचित व अनिवार्य न समझा गया।यह भारत का दुर्भाग्य था कि स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चातएक लम्बे अंतराल तक भारतीय राजनेता भारत की रक्षा चुनौतियों व सैन्य शक्ति के वास्तविक स्वरूप का स्पष्ट आँकलन व निर्धारण करने में अक्षम साबित हुए। सन् 1962 तक सेना में भारतीय अधिकारियों की चिरकालीक कमी तथा भारतीय रक्षा मंत्रालय द्वारा वायु सेना हेतु अप्रचलित व अप्रासंगिक हो चुके 'ऑर्गन' फाइटर बम वर्षकों को खरीद (सस्ते होने के कारण) से भारत सरकार की रक्षा उदासीनता स्वतः उजागर हो जाती है। भारत ने सामरिक अनिवार्यताओं को समझा और सन् 1962 की पराजय के पश्चात् सुरक्षा–विषयक चिन्तन के संकरे घेरे से बाहर निकलकर पहली बार रक्षा पंचवर्षीययोजना का निर्धारण करके अपने रक्षा–सामर्थ्य में वृद्धि का संकल्प लिया। भारत की इसी रक्षा जागरूकता का ही परिणाम था कि सन् 1965 व 1971 के भारत–पाकयुद्धों में भारत को अद्भुत सफलता मिली। 1971 के बांग्ला मुक्ति संघर्ष में अपूर्व सैन्य–कुशलता व दूरदर्शी रक्षायोजना का प्रदर्शन कर भारत न केवल 1962 के कलंक से मुक्त हो सका अपितु श्रीमती इंदिरा गाँधी के कुशल नेतृत्व में भारत ने औद्योगिक, तकनीकी, आर्थिक व रक्षा मामलों में आशातीत विकास कर विश्व में अपना प्रमुख स्थान स्थापित कर लिया। स्पष्टरूप में भारत द्वारा आणविक विस्फोट (मई, 1998) मिसाइलों के निर्माण कार्यक्रमएवं रक्षा–आत्मनिर्भरता की दिशा में उठाये गये असाधारण कदम इस दृष्टि से अनुकरणीय रहे हैं तथा वर्ष 2014 से नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। आज भारत के द्वारा जी–20 का नेतृत्व किया जा रहा है। अपने राष्ट्रीय हित के संवर्द्धन में भारत द्वारा आत्मरक्षा हेतु की जा रही रक्षा तैयारियों के अतिरिक्त अपने सभी पड़ोसियों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना का प्रयत्न, विश्व शान्ति की स्थापना में निःशस्त्रीकरण का प्रबल समर्थनएवं विश्व बन्धुत्व की भावनाओं के विकास हेतु सार्थक प्रयास भारतीय विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य हैं।यह बात और है कि भारत की उदारता व सदाशयता के बावजूद पाकिस्तान और चीन जैसे पड़ोसियों से उसके (भारत) सम्बन्ध मधुर नहीं हो पा रहे हैं। आज जहाँ आतंकवाद व क्षेत्रीयता जैसी आंतरिक समस्यायें तथा पाकिस्तान की आतंकी समर्थनएवं कश्मीर में उसके द्वारा संचालित अप्रत्यक्षयुद्ध भारतीय सुरक्षा को चुनौती दे रहे हैं, वहीं शीतयुद्ध की समाप्तिएवं विश्व पटल पर सोवियत अनुपस्थिति से उत्पन्न रिक्तिता की पूर्ति हेतु दक्षिणएशिया में अमेरिका की नूतन भूमिका से न केवल भारत अपितु सभी दक्षिणएशियाई राष्ट्र अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त कर रहा है। नवीन विश्व वातावरण में भारतएशिया में अपना सहयोगी प्रभाव क्षेत्र विस्तृत करने की रणनीति पर चल रहा है। विश्व के सभी शक्तिशाली देशों के समर्थन और विश्वास ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कोएक नया आयाम दिया है। भारत अपने राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ–साथ सामूहिक सुरक्षा की स्थापना में समर्थ दिख रहा हैं।

पिछले ग्यारह वर्षों में भारत की रक्षायात्रा साहसिक निर्णयों, रणनीतिक दूरदर्शिता और अटूट संकल्प द्वारा परिभाषित की गई है। स्वदेशी उत्पादन को बढ़ाने और निर्यात का विस्तार करने से लेकर नवाचार को अपनाने और आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करने तक, देश ने सच्ची आत्मनिर्भरता की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। इनोवेशन फॉर फॉर डिफेंसएक्सीलेंस, रक्षा गलियारे और सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जैसी पहल भविष्य के लिए तैयार रक्षा ईको सिस्टम की नींव रख रही हैं। साथ ही, सीमा पार आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ भारत के सख्त रुख ने राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। निरंतर निवेश, नीतिगत सुधारों और बढ़ती वैश्विक उपस्थिति के साथ, भारत अब केवल अपनी सीमाओं की रक्षा नहीं कर रहा है, बल्कियहएक मजबूत, आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर सैन्य शक्ति का निर्माण कर रहा है। रक्षा बजट में लगातार वृद्धि देखी गई है। रक्षा बजट 2013–14 के 2.53 लाख करोड़रूपए से बढ़कर 2025–26 में 6.81 लाखरूपए हो गया है।[8] प्रस्तुत अध्ययन की विषय–वस्तु भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक का विश्लेषण है।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of The study)

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य

- राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का विवेचन करना,
- भारत की भू–राजनीति, परमाणु रणनीतिएवं भू–युद्ध कौशल का अद्यतन विश्लेषण करना,
- भारत की रक्षा तैयारी की स्थिति का अवलोकन करना,
- भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक का अवलोकन करना तथा
- भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा की मार्ग की समस्याओं तथा चुनौतियों से निबटने के उपाय सुझाना है।

अध्ययन का औचित्य (श्रनेजपपिबंजपवद व िजीम ैजनकल)

वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। चीन की उभरती नकारात्मक शक्ति से लेकर जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद की चुनौती से लेकर कोविड–19 महामारी के चलते देशों में नई नींव पड़े बिना ही पुराने ढांचे ढह रहे हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चर्चाओं पर गहमागहमी बनी हुई है।ऐसी स्थिति में भारत के सुरक्षा परिदृश्य परएक नजर डाली जानी चाहिए–

- भारत, महत्वपूर्ण आपूर्ति के लिए चीनी विनिर्माण पर बहुत हद तक निर्भर रहा है। जब भारतीय सशस्त्र बल भारत–चीन सीमा पर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का सामना कर रहे थे, तब भारत को अहसास हुआ कि विदेशी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भरता, सर्वोच्च क्रम की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए चुनौती बनी हुई है, जिसे अब और अनदेखा नहीं किया जा सकता।
- भारत तब से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में घरेलू क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ा है, औरएक नए दृष्टिकोण से मुक्त व्यापार समझौतों को देखना शुरू किया है।
- देश में सैन्य नेतृत्व के विचार को विकसित किया जा रहा है। इस तर्क में राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ न केवलयुद्ध और रक्षा, बल्कि वित्तीय स्वास्थ्य, खाद्य, ऊर्जा, सूचना और पर्यावरण सुरक्षा भी शामिल है। अतः राष्ट्र की सुरक्षा की दृष्टि सेएक सशस्त्र संघर्ष को देखने की बजाय सरकार के सभी क्षेत्रों के विकास हेतुएक संपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।
- महामारी के बाद के परिदृश्य में राष्ट्रीय संसाधनों पर गंभीर दबाव बना हुआ है। इसे देखते हुए नीति निर्माताओं को

सैन्य और नागरिक क्षेत्रों के बीच तालमेल को रेखांकित करना महत्वपूर्ण होगा। सशस्त्र बलों में निवेश, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मेंयोगदान देता है। सैन्य उत्पादों की मांग और परिवहन व स्वदेशी उपकरणों के स्वदेशीकरण से उद्योगों को प्रोत्साहन मिलता है। राष्ट्रीय आपदा के दौरान सेना को प्रदत्तये संसाधन ही काम आते हैं।

सेना के नेतृत्व में केवल सशस्त्र कार्यवाही पर ध्यान केंद्रित करने की तुलना में, राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यापक अवधारणा को बनाए रखने का विचार अतिउत्तम है। जैसे–जैसे दुनियाभर के राष्ट्र अपने लक्ष्यों, तरीकों और साधनों को अधिक संतुलन में लाने के लिए अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं को स्वीकार करेंगे, संसाधन आवंटन के प्रश्न और भी अधिक विवादास्पद हो जाएंगे और नीति निर्माताओं को देश के विभिन्न उपकरणों की भूमिकाओं के बारे में अधिक रचनात्मकरूप से सोचने की आवश्यकता होगी। अतःयह सही समय है, जब भारत को राष्ट्रीय सुरक्षा की सोच में पीछे न रहकर कदमताल करना चाहिए और वहऐसा कर भी रहा है।[9]

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है तथा समसामयिक विश्व मेंयह बहुत ही संवेदनशील विषय बना हुआ है। इस विषय पर अध्ययन करके भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा विषयक सभी पक्षों को समझा जा सकता है। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत विषय पर शोध का औचित्य प्रमाणित होता है। प्रस्तुत विषय पर अध्ययन करके निम्नलिखित बिन्दुओं पर सार्थक निष्कर्ष की प्राप्ति अपेक्षित है, जो शोध कार्य की सार्थकता, महत्ताएवं औचित्य को प्रमाणित करता हैः

- राष्ट्रीय सुरक्षा के आशय का स्पष्टीकरण अपेक्षित है।
- राष्ट्रीय हित का केन्द्रीय विषय राष्ट्रीय सुरक्षा है तथा विदेश नीति के केन्द्र में भी इसकी उपस्थिति है। इस सन्दर्भ में शोध की सार्थकता प्रमाणित हो जाती है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार तत्वों व कारकों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत शोध से अपेक्षित है। इससे भी अध्ययन का औचित्य प्रमाणित होता है।
- भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा के सामने 21वीं शताब्दी में कई चुनौतियों आयी है जिनका साहसपूर्ण मुकाबला किया जा रहा है।

शोध परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

शोध–प्रबन्ध में परिकल्पना का भाग भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। शोध सम्पन्न करने वाले के सामने सम्पूर्ण शोध के विषय–वस्तु के निष्कर्ष को पूर्व में महजएक कल्पना ही किया जा सकता है तथा उसके स्वरूप के प्रति संभावना व्यक्त की जा सकती है। शोधार्थी ने भी अपने शोध में औचित्य के निर्धारण में परिकल्पना किया है। प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा के सभी पक्षों विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक के स्पष्टीकरण की परिकल्पना की गई है। भारत हमेशा ही अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सजग रहा हैं तथा नरेन्द्र मोदी के प्रधानमन्त्रित्व काल में राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति अधिक प्रतिबद्धता और सजगता है। आने वाले दिनों में भारत विश्व में अधिक शक्तिशाली राष्ट्र केरूप में उभरेगा तथा इसकी राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष उपस्थित अधिकाधिक समस्याएँ स्वतः समाधान को प्राप्त करेंगी। स्पष्टतः प्रस्तुत विषय पर शोध की परिकल्पना, जो अध्ययन के औचित्य निर्धारण में भी स्पष्ट है के सम्बन्ध में भी शोध कार्य की उपयोगिता, प्रासंगिकताएवं वांछनीयता सर्वविदित है।

शोध–प्रणाली (Research Methodology)

व्रतमान अध्ययन शोध कार्य में अध्ययन पद्धति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो परिकल्पना को वास्तविकता में परिवर्तित करने में सहायक होती है। वर्तमान अध्ययन की पद्धति का जहाँ तक सवाल है तोयह प्रमुखतः वस्तु–विश्लेषणात्मक है, हालाँकिऐतिहासिक तथा तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार किया गया है।

वर्तमान अध्ययन के लिए आंकड़ों के स्रोत – द्वितीयक आंकड़ों की सहायता ली गई। द्वितीयक आंकड़ों के स्रोत विभिन्न

- पुस्तकें,
- पत्रिकाएँ,
- सन्दर्भ वार्षिकयथा– भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से प्रकाशित विभिन्न वर्षों का भारत'
- सरकारीएवं गैर सरकारी रिपोर्ट,
- अप्रकाशित शोध–प्रबंध,
- दैनिक समाचार पत्र,
- वेबसाइट इत्यादि रहे हैं।

द्वितीयक समंकों केएकत्रीकरण के पश्चात् आंकड़ों के विश्लेषणएवं निर्वचन के क्रम में आवश्यकतानुसार उपयुक्त गणितीयएवं सांख्यिकीय विधियों की सहायता ली गई। इन रीतियों में

- अनुपात
- समानुपात
- प्रतिशतता
- प्रवृत्ति विश्लेषण
- सारणीयन इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

अध्ययन के क्रम में अवलोकनों को प्रस्तुत करते समय

- दण्डालेख
- आयतचित्र
- वृत चार्ट

का उपयोग किया गया और आवश्यकतानुसार तथ्यों की चित्रात्मक प्रस्तुति संभव हो सकी ।

कार्य–योजना (Plan of work)

वर्तमान अध्ययन को निम्नांकित छः अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत किया गया है;

अध्याय –1: प्रस्तावना

यह अध्याय परिचयात्मक प्रकृति का है। इस अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन की समस्या, उद्देश्य, औचित्य परिकल्पना, शोध–प्रणाली तथा कार्य–योजना का विवरण प्रस्तुत किया गया। साथ ही, संबंधित विषयक साहित्य का पुनरावलोकन भी समाहित किया गया है।

अध्याय – 2: राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा

राष्ट्रीय सुरक्षा किसी देश की सरकार की अपने नागरिकों, अर्थव्यवस्था और अन्य संस्थानों की रक्षा करने की क्षमता है। आज, राष्ट्रीय सुरक्षा के कुछ गैर–सैन्य स्तरों में आर्थिक सुरक्षा, राजनीतिक सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, मातृभूमि सुरक्षा, साइबर सुरक्षा, मानव सुरक्षा और पर्यावरण सुरक्षा शामिल हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, सरकारें कूटनीति के साथ–साथ राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति सहित रणनीति पर भरोसा करती है।

20वीं शताब्दी के अधिकांश समय के लिए, राष्ट्रीय सुरक्षा सख्ती से सैन्य शक्ति और तैयारी का मामला था, लेकिन परमाणुयुग की शुरुआत और शीतयुद्ध के खतरों के साथ,यह स्पष्ट हो गया कि पारंपरिक सैन्ययुद्ध के संदर्भ में राष्ट्रीय सुरक्षा को परिभाषित करना महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय सुरक्षाएक विस्तृत बहुआयामी अवधारणा है जिसमें पाश्चात्य चिंतन का प्रभाव अधिक दिखाई

पड़ता है। प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का विवेचन किया गया है।

अध्याय–3: भू–राजनीति, परमाणु रणनीति**एवं भू–युद्ध कौशल**

किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा व्यवस्था में वहाँ के भूगोल की सक्रिय भूमिका होती है, क्योंकियह तत्त्व सबसे अधिक स्थिर, स्थायी, प्रत्यक्ष व प्राकृतिक होता है। एक राष्ट्र की सुरक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु और उसे शक्ति प्रदान करने में भूगोल के महत्त्व को कभी नकारा नहीं जा सकता। मद्यपि वैज्ञानिकएवं तकनीकी प्रगति के परिणामस्वरूप भौगोलिक तत्वों में परिवर्तन क्षमता आ गई. है, किन्तु इसकी वास्तविकता में परिवर्तन पूरी तरह करना आज भी संभव नहीं हो सका है। सुरक्षा के सन्दर्भ में आज भी भौगोलिक परिस्थितियां प्रमुखएवं निर्णायक भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत अध्याय में भारत भू–राजनीति, परमाणु रणनीतिएवं भू–युद्ध कौशल का अद्यतन विश्लेषण उपस्थापित किया गया है।

अध्याय–4: भारत की रक्षा तैयारी

प्रत्येक राष्ट्र की बुनियादी समस्या उसकी सुरक्षा से जुड़ी होती है। प्रत्येक आधारभूत लक्ष्य उसका बुनियादी राष्ट्रीय हित है। शक्ति का इस्तेमाल राष्ट्रीय हित के प्रतिपादन में तथा सुरक्षा को सुनिश्चित करने में होता है। आज के परमाणुयुग में सुरक्षा को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है, जिस कारण इसका महत्त्व सबसे अधिक माना जा रहा है। सुदृढ़ राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आन्तरिकएवं बाहा समस्याओं की समीक्षाएवं समाधान हेतु अपेक्षित सैनिक व असैनिक तैयारियों पर गहनता से ध्यान देना ही राष्ट्रीय सुरक्षा का पहला कदम कहा जा सकता है। उभरते हुए वैश्विक परिवेश में भारत ने सुरक्षा के प्रति अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें आर्थिक सुदृढ़ता, आंतरिक सम्बद्धता और प्रौद्योगिकीय प्रगति भी शामिल है। तथापि, देश के समक्ष मौजूद सुरक्षा सम्बन्धी चुनौतियों को देखते हुए भारत को किसी भी आक्रमण का जवाब देने तथा इस क्षेत्र में शान्ति और स्थिरता को प्रोत्साहन देने के लिए रचनात्मक सहयोग देने के लिए अपेक्षित स्तर की सैन्य क्षमता और तैयारी बनाए रखनी होगी। अध्ययन कायह अध्याय भारत की रक्षा तैयारी की स्थिति का अवलोकन को समर्पित है।

अध्याय–5: राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक का अवलोकन

अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिवेश में हो रहे तेज बदलाव, निरन्तर परिवर्तनशीलता और अत्याधिक अस्थिरता रक्षा चुनौतियों से निपटने के साथ–साथ रक्षा भागीदारी पर जोर डालता है। आज सुरक्षा के मायने बदल गये है। शीतयुद्ध के दौर में सुरक्षा सैन्य कारकों से गहराई से जुड़ी थी लेकिन आज सुरक्षा के मूल कारक असैन्य तत्वों से प्रभावित है। मौजूदा परिवेश में सुरक्षायुद्ध से निपटने का साधन नहीं है बल्कियह सतत् और समावेशी विकास (Sustainable and Inclusive Development) का दूसरा नाम है। राष्ट्रीय सुरक्षा के दायित्वों का निर्वाह करने के लिए ही राष्ट्र रक्षा नीति का निर्माण करते हैं जिससे किसी भी समय जब कोई आक्रमणकारी हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वभौमिकता के समक्ष चुनौती बनने का साहस करे तो उसे अपनी सम्पूर्ण क्षमता से टक्कर देने के साथ उसके मनोबल और साहस की कमर तोड़ी जा सके। प्रस्तुत अध्याय में राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति विशेषतः वर्ष 2014 से अबतक का अवलोकन किया गया है।

अध्याय–6: निष्कर्षएवं सुझाव

इस अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन का सारांश तथा निष्कर्ष उपस्थापित किया गया है। साथ ही साथ, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के मार्ग की चुनौतियों और समस्याओं के निराकरण को लक्षित सुझावों को भी रखा गया है।

सन्दर्भ सूची

1. कुमार, महेन्द्र (1984), अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धांतिक पक्ष, शिवलाल अग्रवालएण्ड कम्पनी, आगरा, पृष्ठ –279
2. सिन्हा, अजय कुमार (2012), राष्ट्रीय सुरक्षा की पम्परागतएवं अपम्परागत समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृष्ठ–4–5
3. श्रीवास्तव, दीप कुमार (2018), राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा का अवलोकनात्मक अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्युमैनिटीजएण्ड सोशल साइंस इन्वेंशन, वर्ष –7 अंक –9, सितम्बर, पृष्ठ 76
4. अहिरवार, दिनेश (2019), भूमंडलीकरण के दौर में उदीयमान भारत के समक्ष आंतरिक सुरक्षा–एक चुनौती जर्नल ऑफ इमरजिंग टेक्नोलॉजिजएण्ड इनोवेटिव रिसर्च, वर्ष –6, अंक 6, जून, पृष्ठ 881
5. वही, पृष्ठ 891–892
6. वाजपेयी, रश्मि (2023), भारत की आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियोंएवं समाधान की संभावनाएँ:एक अध्ययन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉटस, वर्ष–11, अंक–10, अक्टूबर, पृष्ठ 579–582
7- www-pib- gov-in
8- www-mod-gov-in
9. 10 सितम्बर, 2021 के 'द हिंदू' में प्रकाशित हर्ष वी पंत का लेख www-thehindu-com